आखिर कैसे नष्ट हुई सिंधु घाटी सभ्यता, क्या है हड़प्पा का रहस्य ?

भाग-4

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा|||हरसा

गुरदीप सिंह ने पर्यावरण तकनीक के आधार पर हड़प्पाई क्षेत्र में बदलाव संबंधी साक्ष्य प्रस्तुत किये है. जिस समय हड़प्पा सभ्यता अपने चरम पर थी, लोगों ने बारिश के पानी की निकाशी की उत्तम व्यवस्था की थी. उन्होंने अपने मुहरों तथा मृदभांडों आदि पर हाथी, गैंडा, बाघ जैसे सदाहरित मौसम में रहनेवाले जानवर का अंकन किया है.

आज के भारत पाकिस्तान के थार क्षेत्र जिसे हाकरा/ सरस्वती क्षेत्र (चोलिस्तान) कहा जाता है, में लगभग 200 हड़प्पाई बस्तियां प्राप्त हुई है. जबकि वर्तमान में यहां लोग नहीं रहते है.

ये सभी साक्ष्य बतलाते है की सिन्धु घाटी के क्षेत्र में कभी मौसम अनुकूल रहा होगा तथा पर्याप्त वर्षा होती रही होगी लेकिन बाद के दिनों में संसाधनों के अतिशय दोहन के कारण पारिस्थितिकी असंतुलन पैदा हुआ. इससे बारिश में कमी आई तथा अन्य क्षेत्र में लोग प्रवासन कर गये.

मई 2012 में, अमेरिका के रिसर्च संस्थान वुल होल ओलियानो ग्राफिक इंस्टिट्यूट ने भी सैटेलाईट आकड़ो के विश्लेषण कर इस मत की पुष्टि की है. इसके प्रमुख वैज्ञानिक ल्युबिड ज्वायसन ने अपने रिपोर्ट में निम्न सार प्रस्तुत किये. "मानसून बारिश में आई कमी के कारण सिन्धु घाटी क्षेत्र में बहने वाले नदियों के प्रवाह में कमी आई, परिणामस्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता का पतन हुआ. क्योंकि सभ्यता के लोग कृषि कार्यों के लिए मुख्यतः नदी जल स्त्रोतों पर निर्भर थे."

इस तरह आपने इस पोस्ट में सिंधु घाटी सभ्यता का विकास, हड़प्पा सभ्यता का पतन या सिंधु घाटी सभ्यता का अंत कैसे हुआ जैसे हड़प्पा के रहस्य के बारे में पढ़ा. आशा है की आप इससे लाभान्वित होंगें.